आचार्य गणधरकीर्ति

जीवन-परिचय : गणधरकीर्ति मुनि गुजरात के निवासी थे। इन्होंने अपनी गुरु परम्परा प्रशस्ति में बताया है कि आचार्य पुष्पदन्त के प्रशिष्य और कुवलयचन्द के शिष्य थे।

इनका समय 12वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ एक ही है—

1. ध्यानविधि : गणधरकीर्ति महाराज ने किन्हीं सोमदेव को ज्ञान देने के लिए और उनके सन्देह को दूर करने के लिए 'ध्यानविधि' नामक 40 पद्यों वाली रचना लिखी है। रचना का नाम 'अध्यात्मतरंगिणी' भी है। इसमें भगवान आदिनाथ की ध्यानावस्था का वर्णन करते हुए ध्यानों का स्वरूप और विधि का वर्णन है।

वहाँ शुभतुंग देव के द्वारा निर्मित 'वसति' अर्थात् जैन मन्दिर में, जहाँ वीरसेनाचार्य ने धवला टीका लिखी थी, वहीं पर गणधरकीर्ति ने यह टीका विक्रम संवत् 1189 में चैत्र शुक्ल पंचमी रविवार के दिन पूर्ण की थी। उस समय गुजरात के चालुक्य वंशीय राजा जयसिंह का राज्यकाल था।